National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2025; 1(62): 01-04
© 2025 NJHSR
www.sanskritarticle.com

कु . शालू
पीएच.डी.छात्रा,
पुस्तकालय विज्ञान विभाग,
ग्लोकल स्कूल ऑफ़ लाइब्रेरी साइंस,
ग्लोकल यूनिवर्सिटी, सहारनपुर ऊ.प्र.

शोधनिर्देशक
डा.बसवराज एम.टी.
एसोसिएट प्रोफेसर,
ऑफ़ ग्लोकल स्कूल ऑफ़ लाइब्रेरी साइंस,
ग्लोकल यूनिवर्सिटी, सहारनपुर ऊ.प्र.

Correspondence:
कु . शालू
पीएच.डी.छात्रा,
पुस्तकालय विज्ञान विभाग,
ग्लोकल स्कूल ऑफ़ लाइब्रेरी साइंस,
ग्लोकल यूनिवर्सिटी, सहारनपुर ऊ.प्र.

पुस्तकालय कार्यबल और डिजिटल कौशल विकास : वर्तमान आवश्यकताएँ और भविष्य की राह

कु० शालू , डा.बसवराज एम.टी.

सारांश

डिजिटल प्रौद्योगिकी के बढ़ते प्रभाव ने पुस्तकालयों की पारंपरिक भूमिका को बदलते हुए उन्हें डिजिटल सूचना केंद्रों में परिवर्तित कर दिया है । पारंपरिक पुस्तकालय का स्थान अब डिजिटल पुस्तकालय ने ले लिया है ।इस परिवर्तन के साथ पुस्तकालय कार्यबल के लिए डिजिटल कौशलों का विकास अनिवार्य हो गया है । डिजिटल पुस्तकालय में आये दिन बदलाव देखने को मिल रहे हैं ऐसे में बदलाव के साथ साथ कार्य करने की दिशा में भी परिवर्तन अनिवार्य है ।वर्तमान शोध-पत्र पुस्तकालय कर्मचारियों के डिजिटल कौशल की आवश्यकताओं का विश्लेषण करता है और यह दर्शाता है कि सूचना प्रबंधन, ई-संसाधनों का संचालन, ऑटोमेशन सॉफ्टवेयर, साइबर सुरक्षा, और डेटा विश्लेषण जैसे क्षेत्रों में दक्षता कितनी आवश्यक है । डिजिटल प्रारूप में मौजूद ई-संसाधन , ऑटोमेशन सॉफ्टवेर , साइबर सुरक्षा एवं डिजिटल लाइब्रेरी से जुड़े अन्य संसाधनों की पूर्ण समझ होना कितना आवश्यक है ।प्रस्तुत शोध में डिजिटल कौशल विकास से जुड़ी प्रमुख चुनौतियों, जैसे तकनीकी प्रशिक्षण की कमी, मानसिक रुझान, और संसाधनों की सीमाओं को भी उजागर किया गया है। साथ ही, शोध में प्रशिक्षण कार्यक्रमों, ऑनलाइन पाठ्यक्रमों, और संस्थागत सहयोग जैसे समाधानों पर प्रकाश डाला गया है एवं गहन अध्यन के बाद ही प्रस्तुत किया गया है ।यह अध्ययन इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि पुस्तकालयों की प्रभावशीलता और प्रासंगिकता को बनाए रखने के लिए कार्यबल का डिजिटल सशक्तिकरण अत्यंत आवश्यक है ।

बीज शब्द - पुस्तकालय कार्यबल, डिजिटल कौशल, सूचना प्रौद्योगिकी, पुस्तकालय ऑटोमेशन, ई-संसाधन, प्रशिक्षण और विकास, KOHA सॉफ्टवेयर, डिजिटल लाइब्रेरी ।

शोध विस्तार

वर्तमान डिजिटल युग में पुस्तकालयों की भूमिका केवल पुस्तकों और मुद्रित संसाधनों के संग्रह और वितरण तक सीमित नहीं रही, बल्कि वे सूचना प्रौद्योगिकी के ज्ञान केंद्र बन चुके हैं । वर्तमान युग में डिजिटल लाइब्रेरी हर युवा के लिए जरुरत सा बन गया है ।ई-पुस्तकें, ऑनलाइन डेटाबेस, और क्लाउड-आधारित जैसी सेवाएँ अब डिजिटल पुस्तकालयों का अभिन्न हिस्सा बन गई हैं । इन परिवर्तनों ने जहाँ उपयोगकर्ताओं को सुविधाएँ प्रदान की हैं, वहीं पुस्तकालय कार्यबल के समक्ष तकनीकी कौशलों की मांग भी उत्पन्न की है । विज्ञान के क्षेत्र में तरक्की के साथ साथ डिजिटल संसाधनों का रूप बदला है ।डिजिटल लाइब्रेरी भी इससे अछुता नहीं है। डिजिटल लाइब्रेरी में होने वाले परिवर्तनों के प्रति जागरूकता होना बेहद जरुरी हो चली है ।डिजिटल लाइब्रेरी से जुड़े कर्मचारियों को दिन प्रतिदिन बदलते समय के साथ साथ सीखने की आवश्यकता है जिससे उपयोगकर्ताओं को बेहतर लाइब्रेरी की सुविधायें प्रदान की जा सकें।और अधिक से अधिक संख्या में डिजिटल लाइब्रेरी से उपयोगकर्ताओं को जोड़ा जा सके ।

लम्बे समय से पुस्तकालय कर्मचारियों की शिक्षा और प्रशिक्षण एवं इनसे जुड़े हुए समस्त कार्य भौतिक संसाधनों के प्रबंधन पर केंद्रित थे, पुराने समय से चले आ रहे लाइब्रेरी की कार्यप्रणाली से जुड़े हुए

व्यक्तियों के लिए डिजिटल रूप से जुड़ना एक अलग अनुभव सा है। पारंपरिक लाइब्रेरी जहाँ चार दिवारी के भीतर थी किन्तु अब पुस्तकालय कर्मचारिय एक ऐसे वातावरण में कार्य कर रहे हैं जहाँ सूचना का स्वरूप, माध्यम और पहुँच के तरीके पूरी तरह बदल चुके हैं। सब कुछ डिजिटल रूप ले चूका है ।ऐसे में उपयोग किये जा रहे कंप्यूटर एवं डिजिटल लाइब्रेरी के क्षेत्र में चल रहे एप्लीकेशन की जानकारी होना आवश्यक है । सही मायने में कहें तो डिजिटल कौशलों का ज्ञान एवं विकास जैसे सूचना खोज की ऑनलाइन विधियाँ, डिजिटल संग्रह का प्रबंधन, डेटा विश्लेषण, तथा साइबर सुरक्षा की समझ एवं भली भाँती जानकारी अति आवश्यक बन चुके हैं।

इस शोध-पत्र में पुस्तकालय कार्यबल की डिजिटल दक्षता की आवश्यकता, पुस्तकालय में हुए परिवर्तन, समय के साथ साथ लाइब्रेरी क्षेत्र में हुई खोज, उससे जुड़ी चुनौतियाँ, तथा कौशल विकास की रणनीतियों पर विस्तृत चर्चा की गई है, ताकि आधुनिक पुस्तकालय प्रणाली को अधिक प्रभावी और प्रासंगिक बनाया जा सके।

डिजिटल कौशल की आवश्यकता - डिजिटल युग में डिजिटल तकनीक के तेजी से बढ़ते उपयोग ने पुस्तकालयों को एक नहीं राह प्रदान की है जिससे पुस्तकालयों की कार्य-प्रणाली में क्रांतिकारी परिवर्तन आया है ।पारंपरिक सूचना संसाधनों के पुराने चले आ रहे माध्यम के स्थान पर अब डिजिटल युग के माध्यमों ने अपनी जगह बना ली है जैसे अब ई - संसाधनों, डेटाबेस, और डिजिटल संग्रहों का महत्व बढ़ गया है । डिजिटल युग में हुए इन परिवर्तनों के चलते पुस्तकालय कर्मचारियों के लिए डिजिटल कौशल का विकास एवं विस्तृत जानकारी होना आवश्यकता बन गया है । इन कौशलों की मदद से वे न केवल डिजिटल संसाधनों का प्रभावी रूप से प्रबंधन कर सकते हैं, बल्कि उपयोगकर्ताओं को बेहतर और त्वरित सेवाएँ भी प्रदान कर सकते हैं।

डिजिटल संसाधनों का प्रबंधन - डिजिटल संसाधनों का प्रबंधन डिजिटल लाइब्रेरी के क्षेत्र में एक प्रमुख एवं उपयोगी पहलु है ।डिजिटल संसाधनों के अंतर्गत ई-पुस्तकों,ई-जर्नल्स, ऑडियो-विज़ुअल सामग्री, और ओपन एक्सेस जैसे संसाधनों का वर्गीकरण, उपयोग और संरक्षण इत्यादि आते हैं। ऐसे में इनकी पूर्ण समझ एवं जानकारी होना अति आवश्यक बन चला है ।बिना पूर्ण ज्ञान के इनका उपयोग एवं उपयोगकर्ताओं की समस्याओं का समाधान कर पाना मुस्किल है।

पुस्तकालय ऑटोमेशन सॉफ्टवेयर का ज्ञान - डिजिटल पुस्तकालय में आये दिन होने वाले बदलाव के साथ साथ इसमें नए सॉफ्टवेर ही जुड़ रहे हैं ।बात करें वो पुस्तकालय के क्षेत्र में उपयोग किये जा रहे कुछ प्रमुख सॉफ्टवेर जैसे KOHA, SOUL, Libsys हैं ।ऐसे आधुनिक सॉफ्टवेयर का संचालन, कैटलॉगिंग, सर्कुलेशन, और रिपोर्टिंग प्रक्रिया की समझ लाइब्रेरी कर्मचारी की आवश्यकता बन गया है।

सुचना खोज एवं डेटा विशेषण - वर्तमान में मन चाहि सुचना खोजना बेहद आसान प्रक्रिया हो गयी है ।ऑनलाइन प्रयोग किये जा रहे डेटाबेस (जैसे JSTOR, Scopus, आदि) में खोज, शोध सहायता, और उपयोगकर्ता अनुकूल सेवाओं के लिए डेटा का विश्लेषण करना बेहद आसान हो गया है । पुस्तकालय स्टाफ को सूचना खोज एवं डेटा विश्लेषण की जानकारी होना आवश्यक है जिससे उपयोगकर्ताओं को बेहतर सुविधा प्रदान की जा सके।

डिजिटल साक्षरता और सूचना नैतिकता - विज्ञान के विकास की इस दौर में डिजिटल साक्षरता और सूचना नैतिकता की समझ बेहद आवश्यक है ।डिजिटल संसाधनों का जिम्मेदार उपयोग, कॉपीराइट कानूनों की जानकारी और साइबर सुरक्षा के मूल सिद्धांत की समझ होना जरुरी है।

संचार और सहयोग तकनीक - आज के समय में पहुच बेहद आसान हो गयी है। एक व्यक्ति दुसरे व्यक्ति से ईमेल, वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग, डिजिटल प्रस्तुति और सोशल मीडिया के माध्यम से जुड़ सकता है । ऐसे में इन्टरनेट का उपयोग एवं बेहतर तरीके से संचार के माध्यम से उपयोगकर्ताओं को जोड़ा जा सकता है।

नई तकनीकों की समझ - आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI), मशीन लर्निंग, क्लाउड कंप्यूटिंग, और मोबाइल एप्लिकेशन जैसे नवाचारों की बुनियादी जानकारी।

डिजिटल कौशलों के अभाव में न केवल पुस्तकालय की सेवाएँ बाधित होती हैं, बल्कि उपयोगकर्ता अनुभव भी प्रभावित होता है। इसलिए, इन कौशलों का विकास पुस्तकालय कर्मियों की पेशेवर दक्षता और पुस्तकालय की समग्र गुणवत्ता के लिए अत्यंत आवश्यक है।

प्रमुख चुनौतियाँ - डिजिटल परिवर्तन की दिशा में पुस्तकालयों का अग्रसर होना आवश्यक है, लेकिन इस राह में अनेक चुनौतियाँ भी मौजूद हैं, विशेषकर जब बात पुस्तकालय कार्यबल के डिजिटल कौशल विकास की हो । इन चुनौतियों को समझना और उनका समाधान खोजना, पुस्तकालयों के सफल डिजिटलीकरण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

डिजिटल साक्षरता की कमी - कई पुस्तकालय कर्मियों की शिक्षा पारंपरिक प्रणाली पर आधारित होती है, जिसमें डिजिटल तकनीकों का सीमित प्रशिक्षण शामिल होता है । डिजिटल पुस्तकालय पारंपरिक पुस्ताल्यों से पुर्णतः अलग है ऐसे में डिजिटल साक्षर होना आवश्यक है ।डिजिटल लाइब्रेरी से जुड़े नए उपकरणों और सॉफ्टवेयर के उपयोग में कठिनाई ना हो।

प्रशिक्षण की अनुपलब्धता - नियमित और अद्यतन प्रशिक्षण कार्यक्रमों की कमी के कारण कार्यबल समयानुसार अपने कौशलों को उन्नत नहीं कर पाता । विशेष रूप से ग्रामीण और अर्द्ध-शहरी क्षेत्रों में यह समस्या अधिक गंभीर है। हमारे देश का एक वर्ग आज भी शिक्षा के अभाव में कई सेवाओं का लाभ नहीं ले पा रहा है ।ऐसे में डिजिटल लाइब्रेरी की उपलब्धता सभी वर्ग के व्यक्तियों के लिए एक अहम

पहलु बन चूका है ।ज्यादा से ज्यादा व्यक्तिओं को प्रशिक्षित करने के लिए ठोस कदम उठाने की आवश्यकता है ।

वित्तीय संसाधनों की कमी – वर्तमान युग में बिना बजट के कुछ कर पाना असंभव सा है। ऐसा देखा जा रहा है की अनेक पुस्तकालयों के पास तकनीकी अपग्रेडेशन और स्टाफ प्रशिक्षण के लिए पर्याप्त बजट नहीं होता, जिससे वे बदलाव के दौर में पीछे छूट जाते हैं ।और इस कारण डिजिटल विकास की गति धीमी पड़ जाती है।

मानसिक रुझान और परिवर्तन का प्रतिरोध – परिवर्तन ही संसार का नियम है ।कुछ कर्मी नई तकनीकों को अपनाने में हिचकिचाहट महसूस करते हैं, विशेषकर यदि वे वर्षों से एक ही प्रणाली में कार्यरत रहे हों । बिना बदलाव के तरक्की कर पाना असंभव है ।नई सोच नये फैसले ही मानव को एक नयी दिशा की ओर ले जाते हैं ।मानसिक रूप से परिवर्तन के लिए तैयार रहना चाहिए एवं भविष्य में बेहतर होने वाले बदलाव को स्वीकार करना चाहिए । मानसिक अवरोध परिवर्तन की प्रक्रिया को बाधित करता है ।

तकनीकी अवसंरचना की कमी - उच्च गति इंटरनेट, आधुनिक कंप्यूटर, सर्वर, और डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता कई पुस्तकालयों में अभी भी सीमित है, जिससे प्रशिक्षण और कार्य निष्पादन दोनों प्रभावित होते हैं ।

भाषाई और सांस्कृतिक विविधता - कई डिजिटल संसाधन अंग्रेज़ी अथवा अन्य विदेशी भाषाओं में होते हैं, जिससे गैर-अंग्रेज़ी भाषी स्टाफ को समझने और उपयोग करने में कठिनाई होती है ।

तकनीकी नवाचार की तेज़ गति - सूचना तकनीक निरंतर विकसित हो रही है। ऐसे में कार्यबल को हर नवीन परिवर्तन के साथ अद्यतन रखना एक बड़ी चुनौती है । इन चुनौतियों के समाधान हेतु समर्पित प्रयास, रणनीतिक योजना और सरकार तथा संस्थानों का सहयोग आवश्यक है ताकि पुस्तकालय कार्यबल डिजिटल रूप से सशक्त और सक्षम बन सके ।

डिजिटल कौशल विकास की रणनीतियाँ - पुस्तकालय कार्यबल को डिजिटल रूप से सक्षम बनाने के लिए सुनियोजित रणनीतियाँ अपनाना अत्यंत आवश्यक है । यह केवल तकनीकी प्रशिक्षण तक सीमित नहीं है, बल्कि एक समग्र दृष्टिकोण अपनाकर संस्थागत समर्थन, संसाधनों की उपलब्धता और सतत अधिगम की संस्कृति को भी बढ़ावा देना आवश्यक है ।

नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम और कार्यशालाएँ - पुस्तकालय स्टाफ के लिए संस्थागत या क्षेत्रीय स्तर पर नियमित डिजिटल कौशल प्रशिक्षण सत्र आयोजित किए जाएँ। इन कार्यक्रमों में ई-संसाधनों का उपयोग, डेटाबेस सर्चिंग, KOHA जैसे सॉफ्टवेयर, और साइबर सुरक्षा जैसे विषय शामिल हों ।

ऑनलाइन शिक्षण प्लेटफॉर्म का उपयोग - NPTEL, Coursera, edX जैसे प्लेटफॉर्म पर डिजिटल साक्षरता, सूचना प्रौद्योगिकी और पुस्तकालय विज्ञान से संबंधित निःशुल्क या किफायती पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं। इनका प्रोत्साहन किया जाए ।

सहकर्मी-आधारित सीखना - अनुभवी और तकनीकी रूप से दक्ष कर्मचारियों द्वारा सहकर्मियों को प्रशिक्षण देना एक प्रभावी रणनीति हो सकती है । यह सीखने की लागत को भी कम करता है और सहभागिता बढ़ाता है ।

पुस्तकालय संघों और पेशेवर नेटवर्क की भूमिका - ILA (Indian Library Association), IASLIC, और अन्य संघों को डिजिटल कौशल विकास कार्यक्रमों में सक्रिय भागीदारी निभानी चाहिए। इनकी सहायता से व्यापक पहुँच और मानक प्रशिक्षण संभव है ।

संस्थागत नीति और प्रोत्साहन - पुस्तकालयों को डिजिटल कौशल विकास को अपनी मानव संसाधन नीतियों में शामिल करना चाहिए। प्रशिक्षण के लिए समय, संसाधन और वित्तीय प्रोत्साहन उपलब्ध कराए जाएँ ।

तकनीकी अवसंरचना का सुदृढ़ीकरण - प्रशिक्षण तभी प्रभावी हो सकता है जब पुस्तकालयों में उपयुक्त हार्डवेयर, इंटरनेट, और सॉफ्टवेयर उपलब्ध हों। इसलिए, सरकार और प्रबंधन को आधारभूत संरचना पर निवेश बढ़ाना चाहिए।

सतत अधिगम और मूल्यांकन - कौशल विकास को एक बार की प्रक्रिया न मानकर सतत अधिगम के रूप में देखा जाए। साथ ही, डिजिटल दक्षता का समय-समय पर मूल्यांकन और प्रतिक्रिया प्रणाली भी विकसित की जानी चाहिए ।

भाषाई सहूलियत और अनुकूल सामग्री - प्रशिक्षण सामग्री स्थानीय भाषाओं में उपलब्ध करवाई जाए ताकि सभी स्तरों के कर्मचारी सरलता से समझ सकें और आत्मविश्वास के साथ तकनीक का प्रयोग कर सकें । इन रणनीतियों को लागू कर पुस्तकालय कार्यबल को डिजिटल रूप से सशक्त बनाया जा सकता है, जिससे पुस्तकालय सेवाओं की गुणवत्ता और पहुँच में अभूतपूर्व सुधार होगा।

केस स्टडी: भारतीय पुस्तकालयों में डिजिटल कौशल विकास के प्रयास

दिल्ली विश्वविद्यालय की लाइब्रेरी प्रणाली भारत की सबसे बड़ी विश्वविद्यालय पुस्तकालय प्रणालियों में से एक है। यह डिजिटल संसाधनों और सेवाओं की दिशा में लगातार अग्रसर है ।

- KOHA जैसे ओपन-सोर्स लाइब्रेरी मैनेजमेंट सॉफ्टवेयर का कार्यान्वयन ।
- नियमित रूप से डिजिटल साक्षरता और ई-रिसोर्सेस पर कार्यशालाएँ ।
- लाइब्रेरी स्टाफ के लिए ई-लर्निंग पोर्टल और LMS (Learning Management System) आधारित प्रशिक्षण ।
- उपयोगकर्ताओं और स्टाफ दोनों के लिए ऑनलाइन प्रशिक्षण मॉड्यूल विकसित करना । स्टाफ की डिजिटल दक्षता में वृद्धि, उपयोगकर्ताओं को बेहतर मार्गदर्शन, और डिजिटल सेवाओं की पहुंच में विस्तार।

राष्ट्रीय डिजिटल पुस्तकालय - NDLI भारत सरकार की एक प्रमुख पहल है, जो IIT खड़गपुर द्वारा विकसित की गई है। यह लाखों डिजिटल संसाधनों को एक मंच पर लाकर छात्रों और शोधकर्ताओं को सुलभ बनाता है।

- पुस्तकालय स्टाफ को NDLI पोर्टल के तकनीकी प्रबंधन और उपयोग हेतु प्रशिक्षण।
- NDLI क्लब्स के माध्यम से डिजिटल पाठन संस्कृति को प्रोत्साहित करना।
- उपयोगकर्ता इंटरफेस को हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं में उपलब्ध कराना।

IIT मद्रास केंद्रीय पुस्तकालय - IIT मद्रास का पुस्तकालय भारत के अग्रणी तकनीकी संस्थानों में से एक है, जो अत्याधुनिक डिजिटल सेवाओं को अपनाने में अग्रणी रहा है।

- नियमित रूप से डिजिटल टूल्स (जैसे Mendeley, Turnitin, Scopus) पर प्रशिक्षण सत्र।
- लाइब्रेरी स्टाफ को नई तकनीकों जैसे डेटा एनालिटिक्स, ओपन एक्सेस जर्नल्स, और रिसर्च डेटा मैनेजमेंट पर प्रशिक्षित करना।
- डिजिटल रिपॉजिटरी और रिसर्च गाइडेंस के लिए विशेष पोर्टल का निर्माण।

राजा राममोहन राय पुस्तकालय फाउंडेशन (RRRLF), कोलकाता

- ग्रामीण और अर्द्ध-शहरी पुस्तकालयों के लिए डिजिटल प्रशिक्षण कार्यक्रम।
- डिजिटल साक्षरता अभियान और मोबाइल प्रशिक्षण इकाइयाँ।
- राज्य स्तरीय कार्यशालाएँ और प्रशिक्षण संसाधनों का वितरण।

निष्कर्ष

डिजिटल युग में पुस्तकालयों की भूमिका तेजी से बदल रही है, और इस परिवर्तन के केंद्र में पुस्तकालय कार्यबल की डिजिटल दक्षता निहित है। सूचना प्रौद्योगिकी के निरंतर विकास के चलते अब पारंपरिक कार्यप्रणालियों से आगे बढ़कर डिजिटल संसाधनों का प्रबंधन, ई-सेवाओं की डिलीवरी और उपयोगकर्ताओं की नई आवश्यकताओं को समझना अनिवार्य हो गया है।

शोध से यह स्पष्ट होता है कि डिजिटल कौशल का विकास पुस्तकालय कर्मचारियों की दक्षता, आत्मविश्वास, और सेवा गुणवत्ता को सीधे प्रभावित करता है। यद्यपि कई पुस्तकालय डिजिटल बदलाव की दिशा में प्रयासरत हैं, लेकिन प्रशिक्षण की कमी, मानसिक अवरोध, संसाधनों की सीमाएँ और तकनीकी अवसंरचना की अनुपलब्धता जैसी चुनौतियाँ इस प्रक्रिया को धीमा कर देती हैं।

इन चुनौतियों के समाधान हेतु नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम, ऑनलाइन लर्निंग प्लेटफॉर्म, संस्थागत समर्थन, तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता, और सहायक नीतियों की आवश्यकता है। केस स्टडीज़ से यह भी स्पष्ट हुआ है कि जहाँ डिजिटल रणनीतियाँ सफलतापूर्वक लागू की गईं, वहाँ कार्यबल अधिक सशक्त, सेवाएँ अधिक प्रभावी, और उपयोगकर्ता अधिक संतुष्ट हुए।

इसलिए, यह समय की माँग है कि पुस्तकालयों में केवल प्रौद्योगिकी को ही नहीं, बल्कि मानव संसाधनों को भी समान रूप से विकसित किया जाए, ताकि वे भविष्य के डिजिटल सूचना पारिस्थितिकी तंत्र में अग्रणी भूमिका निभा सके।

सन्दर्भ सूची

1. Nwaohiri, N. M., & Nwosu, M. C. (2021). *Reskilling the Library Workforce for the Fourth Industrial Revolution*.
2. Atlantis-Press. (2025, May 15). *The Future of Libraries: Skills, Challenges, and Innovative Visions*
3. Michael Gorman. (2003). *The Enduring Library: Technology, Tradition, and the Quest for Balance*.
4. Librarian Futures – Part III (Library Technology Guides, 2023).
5. ALA & PLA की पहल – "Libraries Lead with Digital Skills"
6. ALA (2025): *Digital Skills for Workforce and Small Business Development*.
7. EBSCO ब्लॉग (2025): *Upskilling for the Digital Age: Library Resources for Building AI Literacy and Cloud Technology Skills*.
8. सन्दर्भ अध्ययन: *A scoping review of digital literacy, digital competence...* (2025) –
9. Grafiati वेबसाइट: *Workforce skill development* और *Workforce skills* विषयों पर ग्रंथों की सूची (2006–2024)
10. TLTR (2022): *Digital Skills Bibliography* – बर्निंग ग्लास रिपोर्ट, Salesforce Global Digital Skills Index